ANUŚILANA, Vol. LXXVI, Year 2017, ISSN 0973-8762

भारत–पाकिस्तान संबंध : आतंक के परिप्रेक्ष्य में

डॉ० आभा सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

भारत–पाकिस्तान के बीच की टकराहट का बीज भारत एवं पाकिस्तान के बीच प्राकृतिक शक्ति असंतुलन तथा पाकिस्तान द्वारा इस विपरीत असंतुलन को स्वीकार किये जाने एवं मौजूदा वास्तविकता के संदर्भों से इन्कार में छिपा हुआ है। पाकिस्तान का सत्ताधारी वर्ग भूस्वामी पंजाबी कुलीन एवं औद्योगिक घरानों से आते हैं और सैन्य वर्गों में से 80 प्रतिशत अधिकारी वर्ग भी इसी पंजाबी कुलीन वर्ग से है।[1] यह वर्ग अपने आपको भारतीय महाद्वीप में मुगल या मुगलों के बाद के सत्तारूढ़ वर्ग का स्वाभाविक उत्तराधिकारी मानता है और इसलिए यह वर्ग लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेतृत्व द्वारा शासित भारत के प्रभुत्व को किसी भी तरह से स्वीकार नहीं कर पाता है तथा उन्हें इस बात का डर भी सताता है कि उस तरह की उनकी जो छवि है, अगर वह टूटती है, तो पाकिस्तान पर इस वर्ग का प्रभाव और नियंत्रण खत्म हो जायेंगे।[2]

भारत को स्पष्ट रूप से इस वास्तविकता को समझना है कि पाकिस्तान के प्रति भारतीय रवैया कितना बेहतर है, इससे पाकिस्तान को कोई मतलब नहीं है, क्योंकि किसी भी स्थिति में भारत के प्रति पाकिस्तान की शत्रुतापूर्ण कार्रवाई कभी रूकने वाली नहीं है।[3] पाकिस्तान कभी भी भारत के खिलाफ की जा रही अपनी किसी भी कार्रवाई से बाज नहीं आयेगा, यहाँ तक कि अगर कश्मीर भी पाकिस्तान को तश्तरी में सजाकर दे दिया जाए, तब भी वह ऐसा ही करेगा, क्योंकि इसका युद्ध भारत की बुनियादी विचारधारा के साथ है।[4]

हालांकि बँटवारे के बाद से शुरूआती दशकों में पाकिस्तानी सेना मूल रूप से धर्मनिरपेक्ष रही थी, लेकिन बांग्लादेश को खोने के बाद तथा 1980 के प्रारंभ में अफगानिस्तान में अपनी गहरी संलग्नता के साथ ही पाकिस्तानी सेना कट्टरपंथी बनने लगी तथा 1990 के आरंभिक दशकों में पाकिस्तानी समाज भी कट्टरपंथ की तरफ मुड़ गया। पिछले तीन दशकों में ईमान नहीं रखने वालों के विरूद्ध होती इस विचारधारात्मक लड़ाई एवं ईमान नहीं रखने वालों पर इस्लाम की आखिरी विजय में विश्वास को पाकिस्तान के मनोविज्ञान में पूरी तरह रचा–बसा दिया गया है। पाकिस्तान की सेना में निम्न ओहदे वाले तथा नयी पीढ़ी के सैनिकों में कट्टरता पुरानी पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है तथा इसके अंदर हदीस के हवाले से स्वाभाविक रूप से इस यकीन को अंतर्निहित करा दिया गया है कि भारतीय उपमहाद्वीप के आखिरी विजय में बतौर मुसलमान योद्धा भाग लेना उनका सौभाग्य है।[5] भारत के लिए जो चिंता का विषय है, वह यह कि यह वहीं युवा पीढ़ी है जिसके हाथों में बहुत जल्द ही